

## भारत के वदेशी ऋण में वृद्धि

स्रोत: द द्रिष्टि

भारत का **वदेशी ऋण (External debt)** मार्च 2023 से **39.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर** बढ़कर मार्च 2024 के अंत तक **663.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर** तक पहुँच गया।

- बाह्य ऋण देश के बाहर किसी स्रोत से उधार लिया गया धन है, जैसे उधार ली गई मुद्रा में चुकाया जाना होता है।
  - इसे वदेशी वाणिज्यिक बैंकों, अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं जैसे **अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF)** और **वशिव बैंक** एवं वदेशी सरकारों से प्राप्त किया जा सकता है।
- **सकल घरेलू उत्पाद (GDP)** के मुकाबले बाह्य ऋण का अनुपात **मार्च 2023 के अंत में 19.0% से घटकर मार्च 2024 के अंत में 18.7%** हो गया।
- दीर्घकालिक ऋण (एक वर्ष से अधिक समय में परपिक्व होने वाला) में **45.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर** की वृद्धि हुई, जो **मार्च 2024 में 541.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर** तक पहुँच गया।
  - **अल्पावधि ऋण** (एक वर्ष तक की अवधि में परपिक्व होने वाला) का अनुपात 20.6% से घटकर 18.5% हो गया।
  - **वदेशी मुद्रा भंडार** में अल्पावधि ऋण का अनुपात 22.2% से घटकर 19% हो गया।
- मार्च 2024 तक भारत का वदेशी ऋण मुख्य रूप से अमेरिकी डॉलर (53.8%), इसके बाद भारतीय रुपए (31.5%), येन (5.8%), SDR (5.4%) और यूरो (2.8%) का स्थान था।
  - **सरकारी** और **गैर-सरकारी** दोनों क्षेत्रों के ऋण में वृद्धि हुई।
- **गैर-वित्तीय नगिमों** के पास बकाया ऋण का सबसे अधिक हिस्सा (37.4%) था, उसके बाद जमा स्वीकार करने वाले नगिम (केंद्रीय बैंक को छोड़कर) (28.1%), सरकार (22.4%) और अन्य वित्तीय नगिम (7.3%) थे।
- बाह्य ऋण में ऋण का हिस्सा 33.4% है, इसके बाद **मुद्रा और जमा (23.3%)**, **व्यापार ऋण और अग्रिम (17.9%)** और **ऋण प्रतभूतियाँ (17.3%)** हैं।

और पढ़ें: [ऋण स्थिरता और वनिमिय दर परबंधन](#)